आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2485 • उदयपुर, शुक्रवार 15 अक्टूबर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

उदास चेहरों पर खुशी की इबारत

हादसों में हाथ–पैर गंवाने वाले कृत्रिम अंग पाकर चलने और करने लगे हैं अपना दैनन्दिन काम। विभिन्न घटनाओं–दुर्घटनाओं में हाथ–पैर गवां देने वाले अनेक लोगों को संस्थान द्वारा अगस्त माह में जगह–जगह शिविर आयोजित कर कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) लगाए गए। इससे पूर्व इन दिव्यांग बन्धु–बहनों के कृत्रिम अंग लगाने के लिए माप शिविर लगाए गए थे। अगस्त माह में कुल 750 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाए गए।

• **खुर्जा** – सिद्धार्थ पब्लिक इंटर कॉलेज खुर्जा (उत्तरप्रदेश) परिसर में 12 अगस्त को 26 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग व कैलिपर प्रदान किए गए। सेवा प्रेरक एवं संयोजक श्री योगेन्द्र प्रताप राघव जी के अनुसार 19 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग 7 दिव्यांगों को टेक्नशियन ने कैलिपर लगाए। शिविर के मुख्य अतिथि खुर्जा के पूर्व विधायक श्री हरपाल सिंह जी थे। जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व प्रधान श्री सत्यवीर जी शास्त्री, श्री जयप्रकाश जी चौहान व श्री राजप्रताप सिंह जी मंचासीन थे। शिविर प्रभारी हरिप्रसाद लड्ढ़ा ने अतिथियों का स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री भरत भट्ट ने किया।

• **आकोला** – खंडेलवाल धर्मशाला, आकोला (महाराष्ट्र) में दो दिवसीय कृत्रिम अंग माप शिविर 27 व 28 अगस्त को आयोजित किया गया जिसमें 206 दिव्यांगजन ने पंजीयन करवाया। इनमें से जांच के बाद 175 दिव्यांगों के कृत्रिम अंग जबकि 20 लोगों के कैलिपर बनाने के माप लिए गए।

पी एंड ओ श्रीमती रोली के निर्देशन में टेक्नीशियन श्री नाथू सिंह व श्री उत्तम चंद ने दिव्यांगों के हाथ और पांवों का माप लिए। शिविर के मुख्य अतिथि

समाजसेवी श्री बृजमोहन जी चितलांग थे। अध्यक्षता गौरक्षण संस्थान के अध्यक्ष श्री प्रकाश जी भाउ ने की। मंच पर विशिष्ट अतिथि के रूप में संस्थान की आकोला शाखा के संयोजक श्री सुभाषचन्द्र जी लड्ढ़ा व श्री हरीश जी मानधने, श्री राधेश्याम जी भंसाली, श्री भगवान जी भाला, श्री रमेश जी बाहेती, श्री सुनील जी मानधने, श्री रतनलाल जी खंडेलवाल, श्री गोपाल जी पुरोहित व पुसद शाखा के संयोजक श्री विनोद जी राठौड़ बिराजित थे। शिविर प्रभारी श्री हरिप्रसाद जी लड्ढ़ा ने अतिथियों का स्वागत–सम्मान एवं श्री भरत जी भट्ट ने शिविर संचालन में सहयोग किया।

• **मालपुरा** – राजस्थान में टोंक जिले मे मालपुरा में 19 अगस्त को श्री बारादर रामचरित मानस मण्डल के सौजन्य से सम्पन्न दिव्यांग जांच, ऑपरेशन चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर में 177 दिव्यांगों ने पंजीयन करवाया। जिनमें से 22 का डॉ. एस. एल. गुप्ता ने जांच के बाद निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चयन किया। प्रोस्थेटिक टेक्नीशियन श्री नाथूसिंह जी व श्री उत्तमचंद जी ने 24 लोगों के कृत्रिम हाथ–पैर तथा 35 के कैलिपर बनाने का माप लिया। महेश भवन में आयोजित शिविर के मुख्य अतिथि टोडारायसिंह नगर के विधायक श्री कन्हैयालाल जी चौधरी थे। अध्यक्षता टोंक की जिला प्रमुख श्रीमती नरेश सरोज जी बंसल ने की। संस्थान की शाखा के संयोजक श्री सुरेन्द मोहन जी जैन एवं शिविर प्रभारी श्री हरिप्रसाद जी लड्ढ़ा ने अतिथियों का स्वागत किया।

विशिष्ट अतिथि सर्वश्री सकाराम जी चौपड़ा (प्रधान), अरूण जी तोमर, विकास जी जैन, राजकुमार जी जैन, सुश्री ऐश्वर्या जी जैन व सुश्री निकी जी जैन थी। व्यवस्था में श्री मुकेश जी त्रिपाठी व श्री भरत जी भट्ट सहयोग किया।

अंतहीन संभावनायें - दिव्यांगता मिटाने के लिये विभिन्नआयाम
WORLD OF HUMANITY का निर्माण प्रगति पर.....

अंतहीन संभावनाएं - दिव्यांगता मिटाने के विभिन्न आयाम

चिकित्सा
- निदान (एक्स रे, ओपीडी, लैब)
- उपचार (कृत्रिम अंग और कैलीपर्स)
- पोस्ट ऑपरेटिव केयर (वार्ड, आईसीयू)
- चिकित्सा सहायता (फार्मेसी एवं फिजियोथेरेपी)

स्वावलम्बन
- हस्तकला या शिल्पकला
- सिलाई प्रशिक्षण
- डिजिटल (कंप्यूटर) प्रशिक्षण
- मोबाइल फोन मरम्मत प्रशिक्षण
- नारायण चिल्ड्रन एकेडमी (निःशुल्क डिजीटल स्कूल)

सशक्तिकरण
- दिव्यांग शादी समारोह
- दिव्यांग हीरोज
- दिव्यांग खेल अकादमी
- दिव्यांग संगोष्ठी - सेमीनार
- इंटर्नशिप वॉलंटियर

सामुदायिक सेवाएं
- आदिवासी और ग्रामीण शिक्षा
- वस्त्र वितरण
- दृश्य एवं श्रवण बाधित के लिए आवासीय विद्यालय
- भोजन सेवा
- राशन वितरण
- वस्त्र और कंबल वितरण
- दवा वितरण

○ 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल ○ 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त
○ निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी ○ निःशुल्क कृत्रिम अंग निर्माण कार्यशाला

○ प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों का निःशुल्क आवासीय
○ व्यावसायिक प्रशिक्षण ○ बस स्टेण्ड से मात्र 700 मीटर दूर ○ रेल्वे स्टेशन से 1500 मीटर दूर

मानवीय सेवा हेतु करें सहयोग
दानदाताओं के सम्मान में

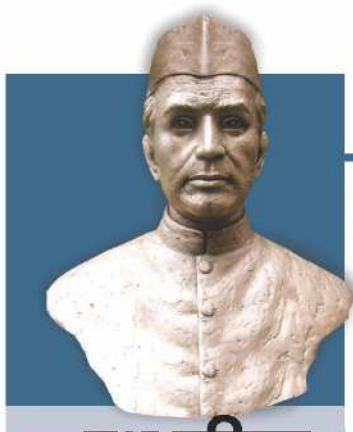

वक्ष प्रतिमा
अस्पताल में प्रवेश पर

डायमण्ड ईंट
सौजन्य दाता

₹51,00,000

- टीवी चैनलों पर 3 मिनट की प्रोफाइल प्रसारित की जायेगी।
- नारायण सेवा की मासिक पत्रिका में एक पृष्ठ रंगीन प्रकाशित होगा। पत्रिका (10 लाख प्रति)।
- सेवा समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में स्वागत।
- 3 कृत्रिम अंग एवं चिकित्सा शिविर का सौजन्य लाभ मिलेगा।
- 4000 पेशेन्ट तक भोजन पहुंचाने का पुण्य मिलेगा।
- जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव दिव्यांगों के साथ मनाएं।
- प्रतिदिन दाता और उसके परिवार के लिए 4000 रोगीजन करेंगे कुशल क्षेम की प्रार्थना।

थ्रीडी फ्रेम
अस्पताल में प्रवेश पर

प्लेटिनम ईंट
सौजन्य दाता

₹21,00,000

- टीवी चैनलों पर 2 मिनट की प्रोफाइल प्रसारित की जायेगी।
- नारायण सेवा की मासिक पत्रिका में आधा पृष्ठ रंगीन प्रकाशित होगा। पत्रिका (10 लाख प्रति)।
- सेवा समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में स्वागत।
- आपश्री को 2 कृत्रिम अंग एवं चिकित्सा शिविरों में सम्मानित किया जायेगा।
- 15 दिनों में 4000 रोगी तक भोजन पहुंचाने का पुण्य मिलेगा।
- जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव दिव्यांगों के साथ मनाएं।
- प्रतिदिन दाता और उसके परिवार के लिए 4000 रोगीजन करेंगे कुशल क्षेम की प्रार्थना।

मानवीय सेवा हेतु करें सहयोग

फोटो फ्रेम
अस्पताल में प्रवेश पर

स्वर्ण ईंट
सौजन्य दाता

₹11,00,000

- टीवी चैनलों पर 1 मिनट की प्रोफाइल प्रसारित की जायेगी।
- नारायण सेवा की मासिक पत्रिका में क्वाटर पेज रंगीन प्रकाशित होगा। पत्रिका (10 लाख प्रति)।
- सेवा समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में स्वागत।
- आपश्री को शिविरों में सम्मानित किया जायेगा।
- 7 दिन तक रोगी एवं परिचारकों को भोजन खिलाने का पुण्य मिलेगा।
- जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव दिव्यांगों के साथ मनाएं।
- प्रतिदिन दाता और उसके परिवार के लिए 4000 रोगीजन करेंगे कुशल क्षेम की प्रार्थना।

पट्टिका पर नाम
अस्पताल में चिल्ड्रन वार्ड

रजत ईंट
सौजन्य दाता

₹5,00,000

- सेवा कार्यक्रमों में विशिष्ट अतिथि के रूप में स्वागत।
- दानदाता को रोगियों का 3 दिन भोजन खिलाने का पुण्य मिलेगा।
- जन्मदिन और सालगिरह का उत्सव दिव्यांगों के साथ मनाएं।
- आपश्री और आपके परिवार के लिए हर दिन होगी प्रार्थना।

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें मो न. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

सम्पादकीय

व्यक्ति संवेदनाओं का पुंज है। संवेदना किसी भी मानव की सहज वृत्ति है। संवेदन शून्य व्यक्ति को मानव मानना संभव नहीं है। ये संवेदनाएं हैं क्या ? वस्तुतः मानव मन भावों की एक समवेत रचना है। ये भाव नकारात्मक भी हो सकते हैं और सकारात्मक भी। पर संवेदना का सहज जुड़ाव तो सकारात्मकता से ही है।

किसी भी मनुष्य या प्राणी पर कोई संकट आये और पीड़ा का अनुभव करके किसी अन्य व्यक्ति का हृदय द्रवित हो उठे, यही संवेदना है। संवेदनाओं का यद्यपि बहुत गहन तल होता है किन्तु सामान्य व्यवहार में संवेदना का अर्थ है – किसी की खुशी में खुश, किसी के पीड़ित होने पर दुःख तथा हरेक जीव को स्वसम मानते हुए उनके साथ वैसा ही व्यवहार करना जो खुद को अच्छा लगे। यह संवेदना का एक रूप कहा जा सकता है।

संवेदनाएं स्वभावजन्य भी होती हैं और परिस्थितिजन्य भी। किन्तु श्रेष्ठ बात यह है कि वे स्वभाव बन जाएं।

कुछ काव्यमय

मानव की संवेदना
विस्तार पाकर
प्राणिमात्र को अभय
कर देती है।
सम्पूर्ण सृष्टि को
सद्भावों से भर देती है।
जब संवेदनाएं
मर जाती हैं।
तो मानवता ठहर जाती है।

- वरदीचन्द राव

स्वामी शरणानन्द जी के अनमोल वचन

- संसार परमात्मा की प्राप्ति में बाधक नहीं है, बल्कि सहायक है। उसका जो हम संबंध स्वीकार करते हैं, वही बाधक है।
- परमात्मा को 'अभी' न मानना बड़ी भारी भूल होगी, अपना न मानना उससे बड़ी भूल होगी, और अपने में न मानना सबसे बड़ी भूल होगी।
- विवेक के प्रकाश को ही जब किसी भाषा–विशेष या लिपि–विशेष में आबद्ध कर देते हैं, तो वह ग्रंथ कहलाता है और जब उस विवेक के प्रकाश को किसी के जीवन में देखते है, तो उसे संत कहने लगते हैं।
- जिसके हृदय में भोग–सुखों का लालच और काम–क्रोधादि विकार मौजूद हैं, वह प्रेम की प्राप्ति तो क्या, प्रेम की चर्चा करने तथा सुनने का भी अधिकारी नहीं है। वास्तव में तो जिसके हृदय में ममता, आसक्ति, कामना और स्वार्थ की गंध भी न हो, वही प्रेमी हो सकता है।

देने का आनंद

प्रसन्नता तो चंदन है,
दूसरे के माथे पर लागाइए
आपकी अंगुलियाँ
अपने आप महक उठेंगीं।

एक बार एक शिक्षक, अपने एक युवा शिष्य के साथ टहलने निकले। उन्होंने देखा कि रास्ते में पुराने हो चुके एक जोड़ी जूते उतरे हैं, जो सम्भवतः पास के खेत में काम कर रहे गरीब मजदूर के थे, जो अब अपना काम खत्म कर घर वापस जाने की तैयारी कर रहा था। शिष्य को मजाक सूझा, उसने शिक्षक से कहा, "गुरुजी, क्यों न हम ये जूते कहीं छिपा कर झाड़ियों के पीछे छिप जाएँ, जब वह मजदूर इन्हें यहाँ नहीं पाकर घबराएगा तो बड़ा मजा आएगा।"

शिक्षक गम्भीरता से बोला, "किसी गरीब के साथ इस तरह का मजाक करना ठीक नहीं है, क्यों ना हम इन जूतों में कुछ सिक्के डाल दें और छिपकर देखें कि इसका मजदूर पर क्या प्रभाव पड़ता है?" शिष्य ने ऐसा ही किया और दोनों पास की झाड़ियों में छिप गए। मजदूर जल्द ही अपना काम खत्म कर जूतों की जगह पर आ गया। उसके जैसे ही एक पैर जूते में डाला, उसे किसी कठोर चीज का आभास हुआ। उसने जल्दी से जूते हाथ में लिए और देखा कि अंदर कुछ सिक्के थे। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और वह सिक्के हाथ में लेकर बड़े गौर से उन्हें पलट–पलट कर देखने लगा। फिर उसने इधर–उधर देखा। दूर–दूर तक कोई नजर नहीं आया तो उसने सिक्के अपनी जेब मे डाल लिए। अब उसने दूसरा जूता उठाया, उसमें भी सिक्के पड़े थे। मजदूर भाव–विभोर हो गया। उसकी आँखों में आंसू आ गए। उसने हाथ जोड़कर ऊपर देखते हुए कहा, "हे भगवान! समय पर प्राप्त इस सहायता के लिए उस अनजान सहायक का लाख–लाख धन्यवाद। उसकी सहायता और दयालुता के कारण आज मेरी बीमार पत्नी को दवा और भूखे बच्चों को रोटी मिल सकेगी।"

मजदूर की बातें सुन शिष्य की आँखें भर आईं। शिक्षक ने शिष्य से कहा, "क्या तुम्हारी मजाक वाली बात की अपेक्षा जूते में सिक्का डालने से तुम्हें कम खुशी मिली?"

शिष्य बोला, "आपने आज मुझे जो पाठ पढ़ाया है, उसे मैं जीवन भर नहीं भूलूँगा। आज मैं उन शब्दों का मतलब समझ गया हूँ, जिन्हें मैं पहले कभी नहीं समझ पाया था कि लेने की अपेक्षा देना कहीं अधिक आनन्ददायी है। देने का आनन्द असीम है, देना देवत्व है।"

यदि आप पैंसिल बनकर
किसी का सुख नहीं लिख सकते,
तो कोशिश करो कि रबड़ बनकर,
दूसरों का दुःख मिटा दो।

– सेवक प्रशान्त भैया

श्री कैलाश जी मानव के प्रवचन की कथायेंअंश

ईश्वर सर्व व्यापक

भगवान राम ने कहा कि जो सर्वव्यापक है। अपन कभी कहते हैं ना साई राम भगवान ने कहा ईश्वर केवल एक है वो सर्वव्यापक है। भगवान राम जी ने कहा कि लक्ष्मण ईश्वर सर्वव्यापक है तो जो सभी में व्यापक है ऐसा जो समझे वो महान् है।

ईश्वर अंश जीव अविनाशी, अब मन सेवा में लीन, हाथ से सेवा करनी। ध्यान प्रभु में लगाना। प्रभु के कार्यों में जो खास लक्ष्मण गीता का संदेश है। और भी बात हुई भक्ति क्या है? भक्ति के साथ पूछा ज्ञान और वैराग्य क्या है? देखो भाई आपने सुना होगा। श्रीमद् भागवत महाकथा में भक्ति कहती है महाभाग नारद तनिक रुकिए। देवऋषि नारद् जी ब्रह्मा जी के पुत्र नारद जी मैं कैसी अभागी हूँ? मैं युवा हूँ और मेरे दोनों बेटे वृद्ध हो गये। मेरे से अधिक वृद्ध हो गये, और एक का नाम ज्ञान है और एक का नाम वैराग्य है, और ये दोनों मूर्छित होकर के संज्ञाशून्य जैसे नशा कर लिया, तो माथा खराब हो गया।

रेल चली रे भैया रेल।।
क्षमा पाँचवा स्टेशन है।।

गुरुजी– पाँचवा स्टेशन क्षमा, क्षमा वीरस्य भूषणम्। एक कायर व्यक्ति उत्तेजित, ये अवगुण है। हाँ, धीरज गुण, यूं धीरे–धीरे कई करे? धीरे करो, क्षमता भाव से करो तो कोई दिक्कत नहीं है, फूर्ति तो होनी चाहिए धीरे का मतलब सुस्ती होना नहीं है। क्षमता भाव भी गुण है।

दया करे जो सब जीवों पर.।।
परहित को अपनाये।।

गुरुजी– परहित को अपनाये मूल बात पकड़नी है। मणिप्रभा जी महाराज साहब बात करते थे कि एक जगह मैं गयी। एक सेठ साहब ने बोला मेरे यहाँ भोजन करने गोचरी लेने के लिए पधारो, तो मैं गयी तो नौ मंजिल की बिल्डिंग थी। दस–दस बाहर कारें खड़ी थी। और नीचे ग्राउन्ड फ्लोर पर कोई हिल रहा था। मैंने उनके नौकर को पूछा अरे! ये क्या हिल रहा है? नौकर ने कहा यह सेठ साहब की माता है– लकवा हो गया।

अरे! उनको पलंग भी नसीब नहीं किया? उनको नीचे सुला रखा है? और उनके पास कोई सेवा करने वाला भी नहीं है?

सेठ मैं तेरे यहाँ गोचरी नहीं लूंगी। सेठ तूं धर्म पर नहीं चल रहा है? सेठ लक्ष्मी जी ने तो तेरे यहाँ निवास कर लिया है।

लक्ष्मी जी कभी भी रुस सकती है क्योंकि जहाँ माता–पिता का अपमान होता है जहाँ माता –पिता बुर्जुर्गो की इज्जत नहीं होती वहाँ लक्ष्मी जी स्थायी रुप से निवास नहीं करती। हमने तो कइयों को देखा है। एक बार मैंने मणिप्रभा जी महाराज साहब से पूछा महाराज सा. आपने तो दीक्षा ले ली। आप तो विलक्षणा जी की शिष्या है।

विलक्षणा जी की जीवनी मणिप्रभा जी महाराज ने लिखी थी। व्याधि में समाधि उनको विलक्षणा श्रीजी को कैंसर हो गया था। पर कैंसर की पीड़ा के बावजूद वो एकाग्रता में स्थिर रही एकाग्रता में रही, मणिप्रभा जी महाराज साहब को मैंने पूछा आपने तो दीक्षा ले ली। आपको कैसे विदित?

बोले हम चतुर्मास में तो एक जगह रहते हैं मानव जी, बाकी 8 महिने तो विहार करते हैं। घरों में रुकते हैं, और घरों पर रुकते है तो वहाँ की दशाएं देखते हैं। उन सेठ साहब का जीवन बदला उन सेठ साहब को मणिप्रभा जी महाराज साहब ने स्वयं धर्म का सही अर्थ समझाया।

धर्म है अपने माता– पिता की सेवा करना, धर्म है अपने दादीजी– दादाजी को राजी रखना, धर्म है अपने बुर्जुर्गों को प्रसन्न रखना, धर्म है अपने बच्चों को शिक्षित और संस्कारित करना, धर्म है समाज सेवा में अपने धन का 10 परसेन्ट कम से कम दान करना, धर्म है 24 घंटों में 1 घंटा गरीबों के हित में काम करना।

परहित बस जिनके मनमाही।
तांकहुं जग दुर्लभ कछु नाही।।

– कैलाश मानव

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

संस्थान की आगामी पांच वर्ष : योजना

1,40,400 शल्य चिकित्सा

संस्थान द्वारा किये जाने वाले ऑपरेशन में 15 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि का लक्ष्य।

1,87,200 सहायक उपकरण निर्माण एवं वितरण

25 प्रतिशत सहायक उपकरण निर्माण एवं वितरण ज्यादा होगा।

46,800 कृत्रिम अंग निर्माण एवं वितरण

10 प्रतिशत कृत्रिम अंग ज्यादा बनायेंगे।

510 दिव्यांग जोड़ों की बसेगी गृहस्थी

सन 2026 तक 10 सामूहिक विवाह समारोह का होगा आयोजन।

250 एनजीओ को लेंगे गोद

प्रतिवर्ष 50 छोटी एनजीओ को देंगे आर्थिक मदद।

एनसीए होगा उच्च माध्यमिक में क्रमोन्नत

सन 2026 में प्रतिवर्ष 1000 निर्धन एवं आदिवासी बच्चे पढ़ेंगे।

22,46,400 रोगियों की नि:शुल्क फिजियोथैरेपी चिकित्सा

25 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि की जायेगी।

नि:शुल्क मोबाईल रिपेयरिंग, सिलाई, कम्प्युटर एवं फिजियोथैरेपी केन्द्र का शुभारम्भ

2026 के अंत तक संस्थान 82-82 अतिरिक्त केन्द्रों का संचालन करेगा।

सम्पूर्ण भारत में 62 पी एण्ड ओ वर्कशॉप केन्द्र का शुभारम्भ

2026 के अंत तक 62 केन्द्रों का अतिरिक्त संचालन किया जायेगा।

दूसरों के आंसू पोंछना : सच्ची कीर्ति

विपुल संपत्ति, असीम सत्ता, गजब का सौंदर्य, अद्भुत पराक्रम, ये सब कीर्ति के कारण अवश्य हैं, पर ये सभी कारण स्थायी नहीं हैं। किसी भी क्षण तुम भिखारी बन सकते हो, किसी भी क्षण तुम सत्ता भ्रष्ट हो सकते हो, किसी भी पल तुम्हारे सौंदर्य में कमी आ सकती है और किसी भी क्षण तुम्हारा शरीर तुम्हें धोखा दे सकता है, और ऐसी स्थिति में तुम्हारी कीर्ति मिट्टी में मिले बिना नहीं रहती है।

परंतु.....कीर्ति का एक कारण ऐसा है जिसकी वजह से तुम्हारी विदाई के बाद भी लागों के दिल में लोगों की जुबां पर तुम्हारा नाम रहता है और वह कारण है–दूसरे के आंसू पोंछने का प्रयत्न।

दूसरों के सुख के लिए तुम कितने प्रयत्न करते हो, यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है, पर दूसरों के दु:ख को दूर करने के लिए तुम कितने प्रयत्नशील हो, यह अधिक महत्वपूर्ण है। आंसू और हास्य के क्षेत्र में दो प्रकार के व्यक्तियों को श्रीमंत मानती हूं। सामने वाले के आंसू देखकर स्वयं के चेहरे का हास्य गायब हो जाए, वह प्रथम नम्बर का श्रीमंत व्यक्ति और सामने वाले के चेहरे का हास्य देखकर स्वयं की आंखों के आंसू सूख जाए, वह दूसरे नंबर का श्रीमंत व्यक्ति।

इन दो प्रकार के श्रीमंत आदमियों में से एक में भी हमारा नंबर है भला? यदि नहीं तो इतना ही कहूँगी कि ऐसे श्रीमंत बने बिना इस दुनिया से हमें विदा नहीं होना है। कहा है –

'जिस नयन ने करुणा छोड़ी,
उसकी कीमत फूटी कौड़ी'

हरींद्र देव की ये पंक्तियाँ हमें चुनौती देती हैं कि हमारे पास यदि करुणा है तो ही हमारे पास आंख है। अन्यथा वह आंख, आंख नहीं पर फूटी कौड़ी के मानिंद है।

– प्रवीणा जी म.सा.

कुट्टू के आटे से पित्त का शमन

चरक संहिता के अनुसार कुट्टू के आटे में जिंक, आयरन, मैग्निशयम, फैट, अमीनो एसिड और विटामिन्स प्रचुर मात्रा में होते हैं। इसमें कटु, तिक्त और कषाय रस होते हैं, जो खाने में अरूचि को दूरकर पित्त का शमन करते हैं। मौसम, व्रत और त्योहार के अनुसार ये पाचनतंत्र के कार्य को सुचारू रखते हैं। इनमें कई तरह के सूक्ष्म पोषक तत्व भी होते हैं।

गुणकारी छाछ

छाछ पाचन तंत्र को दुरस्त रखती है। आयुर्वेद विशेषज्ञों के अनुसार बिना मक्खन की ताजा छाछ एसिडिटी, खट्टी डकार व पेट की जलन सही करती है। इसमें थोड़ा सेंधा नमक डालकर पीएं। मक्खन वाली, लस्सी व दही की श्रेणी में आती है, जिसमें फैट अधिक होता है। इससे कम लाभ मिलता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023